55

एक चरवाहे की चिंता

बाइबल पाठ #22

VI. तीसरे फसह से यीशु के बैतनिय्याह में आने तक (क्रमश:)।
  ढ. बाद में यहूदिया की सेवकाई।
    1. यीशु और सत्तर चेले (लूका 10:1-24)।
    2. यीशु और एक व्यवस्थापक (दयालु सामरी का दृष्टांत) (लूका 10:25-37)।
    3. यीशु, मरियम, और मारथा (लूका 10:38-42)।
    4. यीशु और उसके चेले (प्रार्थना पर शिक्षा) (लूका 11:1-13)।
    5. यीशु और एक फरीसी (लूका 11:37-54)।
    6. यीशु और लोगों की भीड़ (देखें लूका 12:1, 13, 54; 13:1)।
      क. कपट पर शिक्षा (लूका 12:1-12)।

परिचय

यहूदिया में यीशु की बाद की सेवकाई का हमारा अध्ययन जारी रहता है। मण्डपों के पर्व से समर्पण के पर्व तक, इस सेवकाई का समय लगभग $2^1/_2$ महीने का था।

समय के इस कालक्रम के बारे में हम पक्का नहीं कह सकते।[1] उदाहरण के लिए कुछ लोगों का विश्वास है कि मण्डपों के पर्व के लिए यरूशलेम में प्रवेश से पहले (यूहन्ना 7:14), यीशु ने यहूदिया में पहली बार आने पर सत्तर लोगों को भेजा था (लूका 10:1)।[2] दूसरे लोग सत्तर लोगों के मिशन को यूहन्ना 8:59 और यूहन्ना 9:1 में रखते हैं।[3] अपने उद्देश्य के लिए, पहले हमने यूहन्ना 7:14-10:21 में यूहन्ना की सामग्री पर अध्ययन किया है और अब हम यहूदिया में यीशु के बाद के काम के बारे में लूका की लिखी बातों पर विचार करेंगे।[4]

पवित्र शास्त्र का यह भाग अर्थात लूका 10:1-12:12, मसीह के अलग-अलग लोगों के साथ व्यवहार के बारे में बताता है। पिछले पाठ में, प्रभु ने अपने आप को ''अच्छा चरवाहा'' के रूप में दिखाया था (यूहन्ना 10:11, 14)। इस पाठ में, अच्छे चरवाहे को सब लोगों के लिए चिंता करते देखेंगे।

जन साधारण के लिए चिंता (लूका 10:1-24)

मिलती-जुलती शिक्षाओं सहित गलील की महान सेवकाई काफ़ी हद तक बाद में यहूदिया में की गई सेवकाई की तरह ही थी। नये लोगों में प्रभु के जाने के कारण, इस

समानता की अपेक्षा होनी ही थी। गलील की सेवकाई के दौरान, मसीह ने एक लिमिटेड कमीशन अर्थात सीमित आज्ञा देकर बारह को भेजा था (मत्ती 10:1-42)। हमारे इस बाइबल पाठ में, वह यहूदिया के ऐसे ही अभियान के लिए प्रबन्ध कर रहा था: ''और इन बातों के बाद प्रभु ने सत्तर[5] और मनुष्य नियुक्त किए और जिस-जिस नगर और जगह को वह आप जाने पर था, वहां उन्हें दो-दो करके अपने आगे भेजा'' (लूका 10:1)।[6]

हम नहीं जानते कि वे लोग कौन थे, परन्तु प्रभु जानता है (आयत 20)।[7] यह तथ्य महत्वपूर्ण है कि मसीह इस प्रयास के लिए उन सत्तर लोगों को इकट्ठा कर पाया।[8] गलील में उसकी प्रसिद्धि का ग्राफ चरम पर पहुंचकर नीचे आ गया। बहुत से चेले वापस चले गए और उसके बाद उसके साथ न चले (यूहन्ना 6:66)। यूहदिया में, उसकी सेवकाई में दिलचस्पी फिर से जगी। उसके आस-पास बहुत भीड़ रहने लगी (देखें लूका 12:1)।[9] यह उत्तेजना यरूशलेम में विजयी प्रवेश के साथ चरम पर पहुंच गई (मत्ती 21:1-11)।

प्रबन्ध (लूका 10:1-16)

यहूदिया के मिशन के लिए प्रबन्ध व्यावहारिक तौर पर गलील के प्रबन्धों जैसे ही थे: काम करने वालों को दो-दो करके भेजा गया था (लूका 10:1; देखें मरकुस 6:7)। यीशु ने उन्हें चंगा करने और दुष्टात्माओं को निकालने की सामर्थ दी (लूका 10:9, 17, 19; देखें मत्ती 10:8)। उनका मुख्य संदेश यह था कि परमेश्वर का राज्य निकट है (लूका 10:9; देखें मत्ती 10:7)। व्यक्तिगत व्यवहार के सम्बन्ध में दिए गए निर्देश बारह को दिए गए निर्देशों जैसे ही थे।[10] उन निर्देशों को इस प्रकार संक्षिप्त किया जा सकता है: ''काम ज़रूरी है! किसी भी बात को रुकावट न बनने दो! प्रभु में भरोसा रखो!''

उसके बाद (लूका 10:17-24)

सत्तर लोग वापस आने पर उत्तेजना से भरे हुए थे।[11] वे ''फिर आकर कहने लगे, हे प्रभु, तेरे नाम से दुष्टात्मा भी हमारे वश में हैं'' (लूका 10:17)। मसीह की टिप्पणी थी, ''मैं शैतान को बिजली की नाईं स्वर्ग से गिरा हुआ देख रहा था'' (आयत 18)। शैतान का ''स्वर्ग से गिराने'' का अर्थ मूल में खात्मा नहीं था, बल्कि यीशु और उसके चेलों के काम के परिणामस्वरूप उसकी शक्ति का कम होना था। जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे ने लिखा है:

> अर्थ [''देख रहा *था*''] से संकेत मिलता है कि ये शब्द सत्तर लोगों द्वारा अभी-अभी बताए गए अशुद्ध दुष्टात्माओं पर विजय के विषय में थे। उनकी सफलता में यीशु ने शैतान को बिजली सी चमक के साथ ऊंचाई से नीचे गिरते देखा था। शैतान के निकाले जाने से शुरुआत हो चुकी थी-यूहन्ना 16:11; 12:31.[12]

मसीह ने उन्हें ''सांपों और बिच्छुओं को रौंदने का, ... अधिकार'' दिया था (लूका 10:19) अर्थात उन्हें दुष्ट शक्तियों पर अधिकार था[13]-पर मसीह ने कहा, ''तौभी इस से आनन्दित मत हो, कि आत्मा तुम्हारे वश में है, परन्तु इस से आनन्दित हो कि तुम्हारे नाम

स्वर्ग पर लिखे हैं'' (आयत 20)। पुराने और नये दोनों नियमों में ''जीवन की पुस्तक'' अर्थात विश्वासी लोगों की परमेश्वर की सूची की बात है (भजन संहिता 69:28; फिलिप्पियों 4:3; प्रकाशितवाक्य 21:27)। ''स्वर्ग में नाम लिखा'' होने से बढ़कर कोई और बात नहीं है!

यह घटना यीशु के आनन्द करने के साथ समाप्त हो गई। उसने परमेश्वर को अपनी इच्छा इन नम्र चेलों पर प्रकट करने के लिए महिमा दी (लूका 10:21-24; देखें मत्ती 11:25-27; 13:17)।[14]

निजी लोगों के लिए चिंता (लूका 10:25-37)

सत्तर लोगों के मिशन से पता चला कि वह जनसाधारण की कितनी चिंता करता था। अगली घटना से व्यक्तिगत तौर पर लोगों के लिए उसके व्यक्तिगत तरस का पता चला।

एक दिन, जब यीशु वचन सुना रहा था,[15] तो उसका और भीड़ का ध्यान आकर्षित करने के लिए एक व्यवस्थापक उठ खड़ा हुआ (आयत 25क)। इस आदमी को ''व्यवस्था का विशेषज्ञ'' माना जाता था (आयत 25क; NIV)-नागरिक कानून में नहीं, मूसा की व्यवस्था में। उसने प्रभु से पूछा, ''हे गुरु,[16] अनन्त जीवन का वारिस होने के लिए मैं क्या करूं?'' (आयत 25ग)। इससे अधिक महत्वपूर्ण कोई प्रश्न नहीं है; अफ़सोस इस बात का है कि उस आदमी की रुचि उद्धार में नहीं थी, बल्कि वह ''उसकी परीक्षा'' लेना चाहता था (आयत 25ख)। उसका उद्देश्य ''यीशु की प्रामाणिकता को परखना'' था।[17]

प्रभु द्वारा उल्टा उसी से प्रश्न पूछने पर वह चौंक गया होगा: ''कि व्यवस्था में क्या लिखा है?[18] तू कैसे पढ़ता है?'' (आयत 26)। सब लोगों के उसकी ओर देखने के कारण, वह व्यवस्थापक जवाब न देने पर मूर्ख लगना था। ''उस ने उत्तर दिया, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन और अपने प्राण और अपनी सारी शक्ति और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख; और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख'' (आयत 27)। बाद में यह पूछे जाने पर कि ''व्यवस्था में कौन-सी आज्ञा बड़ी है?'' यीशु (मत्ती 22:36; देखें आयतें 35-40) ने यही उत्तर दिया था। परन्तु व्यवस्थापक ने व्यवस्थाविवरण 6:5 और लैव्यवस्था 19:18 से उद्धृत किया था।

यीशु ने इस आदमी से कहा, ''तू ने ठीक उत्तर दिया, यही कर: तो तू जीवित रहेगा'' (आयत 28)। साधारणतया व्यवस्थापक लोग बातें तो बड़ी-बड़ी करते थे, पर उन पर अमल बहुत कम करते थे। किसी बात का ज्ञान होना एक बात है; और उसे अपने जीवन पर लागू करना दूसरी बात।

यह विचार-विमर्श उस विशेषज्ञ की इच्छा के अनुसार नहीं था। वह यीशु के लिए अपने ही बुने जाल में फंस गया था! रक्षात्मक होते हुए,[19] उसने पूछा, ''तो मेरा पड़ोसी कौन है?'' (आयत 29)। इस प्रश्न से यीशु का सबसे प्रसिद्ध और सबसे प्रिय दृष्टांत, जिसे ''दयालु सामरी'' कहा जाता है, दिया गया (आयतें 30-37)।[20] एच. आई. हेस्टर ने कहा है, ''एक लापरवाह प्रश्न पूछने वाले के कारण ... इस सुन्दर कहानी ने इतने अस्पताल और अन्य [चैरिटेबल] संस्थान बनाने का काम किया है, जितने किसी और बात ने नहीं।''[21]

घायल आदमी को अनदेखा करने वाले याजक व लेवी और उसकी सहायता करने वाले एक सामरी[22] के बारे में बताने के बाद, यीशु ने पूछा, ''अब तेरी समझ में जो डाकुओं में घिर गया था, इन तीनों में से उसका पड़ोसी कौन ठहरा?'' (आयत 36)। यहूदी व्यवस्थापक अपने मुंह से ''सामरी'' न कह सका। उसने उत्तर दिया, ''वही जिस ने उस पर तरस खाया'' (आयत 37क)। इस प्रश्न का कि ''मेरा पड़ोसी कौन है?'' उत्तर था ''कोई भी ज़रूरतमंद, चाहे वह मेरा घोर शत्रु ही क्यों न हो।''

यीशु ने उस आदमी की आंखों में झांकते हुए कहा, ''जा तू भी ऐसा ही कर'' (आयत 37ख)। वह व्यवस्थापक अपना सा मुंह लेकर चला गया होगा।

अपने मित्रों के लिए चिंता (लूका 10:38-42)

यहूदिया में से होते हुए यीशु और उसके चेले, बैतनिय्याह नामक गांव में आए,[23] जो जैतून के पहाड़ की पूर्वी ढलान पर, यरूशलेम से लगभग दो मील दक्षिण पूर्व में था। मसीह के तीन मित्र वहां रहते थे: लाज़र और उसकी दो बहनें, मारथा और मरियम (आयतें 38, 39; देखें यूहन्ना 11:1, 2)।[24]

अपने घर में प्रभु का स्वागत करने के बाद (आयत 38), मारथा खाना बनाने में लग गई (आयत 40)। उसके खाना बनाते हुए मरियम प्रभु के कदमों में ''उसका वचन सुनती थी'' (आयत 39)। जब मारथा ने शिकायत की कि उसकी बहन उसकी सहायता नहीं कर रही, तो मसीह ने कहा, ''मारथा, हे मारथा; तू बहुत बातों के लिए चिंता करती और घबराती है। परन्तु एक बात अवश्य है,[25] और उस उत्तम भाग को मरियम ने चुन लिया है: जो उस से छीना न जाएगा'' (आयतें 41, 42)।

क्या यीशु आतिथ्य, भोजन तैयार करने या कठिन काम को तुच्छ जान रहा था? नहीं। ये सब काम सही समय और सही स्थान पर किए जाने पर अच्छे हैं। वह तो *प्राथमिकताओं* को विकसित करने की आवश्यकता पर ज़ोर दे रहा था। जीवन की एक चुनौती अच्छे और बहुत अच्छे में से एक को चुनना होती है। अस्थाई और अनित्यता पर चिढ़ जाने पर हमें यह याद रखना आवश्यक है कि ''केवल *एक* बात आवश्यक है।''

अपने चेलों के लिए चिंता (लूका 11:1-13)

दूसरों की सहायता करने का यत्न करते हुए भी, यीशु ने अपने प्रेरितों को दिए निर्देश को नजरअंदाज नहीं किया। एक दिन, उसके प्रार्थना कर लेने के बाद, चेलों में से एक ने पूछा, ''हे प्रभु, जैसा यूहन्ना ने अपने चेलों को प्रार्थना करना सिखलाया, वैसे ही हमें भी तू सिखा दे''[26] (आयत 1)। मसीह ने पहले पहाड़ी उपदेश में दी गई नमूने की प्रार्थना दोहराई (आयतें 2-4; मत्ती 6:9-13 से तुलना करें)।[27] उसने प्रार्थना के महत्व और हठ से प्रार्थना करने की आवश्यकता पर सामान्य शिक्षा देने के बाद यह बताया।[28] उसने अधिकतर बातें पहले की उसकी शिक्षा[29] में कुछ और बातें जोड़कर,[30] जिसमें हठी मित्र का दृष्टांत भी था, बताईं।[31] इस प्रकार यीशु उन बारह को इस पृथ्वी से अपने चले जाने के बाद के समय के

लिए तैयार करता रहा।

अपने शत्रुओं की चिंता (लूका 11:37-12:12)

निमन्त्रण (11:37, 38)

अगली घटना[32] एक आश्चर्य की बात के रूप में हो सकती है, जबकि फरीसी लोग मसीह को नाश करने के लिए ढूंढ़ रहे थे (मत्ती 12:14; मरकुस 3:6), ''तो किसी फरीसी ने उस से विनती की, कि मेरे यहां भोजन कर'' (लूका 11:37)। यह निमन्त्रण मित्रता का एक संकेत होगा, क्योंकि कुछ यहूदी अगुवे उस पर विश्वास लाए थे (यूहन्ना 12:42)। यह भी सम्भव है कि उस आदमी ने यीशु के बारे में अभी अपना मन नहीं बनाया था और वह उसके बारे में जानने की इच्छा रखता था, परन्तु संदर्भ से संकेत मिलता है कि उस निमन्त्रण में गुप्त लक्ष्य था:[33] ''कि उसके मुंह की कोई बात पकड़ें'' (लूका 11:54)।

किसी फरीसी के घर में प्रभु को दिया गया यह दूसरा निमन्त्रण था। पहले, गलील में मसीह ने एक फरीसी के घर खाना खाया था (लूका 7:36-50)। लूका 14:1-24 में हम ऐसे ही तीसरे निमन्त्रण का अध्ययन करेंगे। प्रत्येक भोज प्रभु और उसके मेजबान में झगड़े का कारण बना। इससे यह प्रश्न उठता है कि ''यीशु ने ये निमन्त्रण स्वीकार ही क्यों किए?'' निश्चय ही, वह नि:शुल्क भोजन के लिए निराश नहीं था। हमें फरीसियों को उसके फटकार लगाने के अवसर की तलाश में रहने की सम्भावना को भी नकारना होगा। मेरा सुझाव है कि मसीह अपने शत्रुओं का भी उतना ही ध्यान रखता था, जितना अपने मित्रों का (देखें मत्ती 5:44)। उसके लिए अपने शत्रुओं के मन परिवर्तन से बढ़कर कोई और खुशी नहीं होगी। फरीसियों के बारे में उसकी कठोर बातें कुछ-कुछ अपने चेलों को उनकी नकल करने के लिए हतोत्साहित करने के लिए भी। हमें भी उन्हें ऐसे लेना चाहिए जैसे वे इस आशा से कही गई हों कि उसके कुछ विरोधी कम से कम मन तो फिराएं।

जब यीशु इस फरीसी के घर में आया, तो वह परम्परागत ढंग से रीतियों का पालन किए बिना ही खाने की मेज पर जाने लगा। ''फरीसी ने यह देखकर अचम्भा किया कि उस ने भोजन करने से पहिले स्नान नहीं किया'' (आयत 38)।[34] मेजबान ने सुन रखा होगा कि मसीह और उसके चेले ऐसी परम्पराओं को नहीं मानते (मत्ती 15:1, 2), परन्तु आंखों के सामने पहली बार आने के कारण वह चौंक गया था।

आरोप (11:39-54)

फरीसी के हिसाब से यीशु पारम्परिक रूप से अशुद्ध था, परन्तु प्रभु ने ज़ोर दिया कि हमें बाहर की नहीं, बल्कि अन्दर की शुद्धता का ध्यान रखना चाहिए है (लूका 11:39, 40; देखें मत्ती 23:25, 26)। उसने अपने मेज़बान को बताया, ''परन्तु हां, भीतरवाली वस्तुओं को दान कर दो, तो देखो, सब कुछ तुम्हारे लिए शुद्ध हो जाएगा'' (आयत 41)। अन्य शब्दों में, ''यदि आप दूसरों की भलाई के लिए अपने मन को अर्पित करते हैं, तो इससे यह

पक्का हो जाएगा कि आप अन्दर और बाहर 'दोनों' तरफ से शुद्ध हैं।''

यह वाक्य ''हाय'' की एक शृंखला के बाद कहा गया था (आयतें 42-44)। बाद में इन्हें ग्रन्थियों और फरीसियों की कटु निन्दा में विस्तार दिया जाना था (मत्ती 23)।[35] एक और अतिथि, जो एक व्यवस्थापक था, को भी ठोकर लगी: ''हे गुरु, इन बातों के कहने से तू हमारी निन्दा करता है'' (लूका 11:45)।

यीशु ने व्यवस्थापकों पर उन हायों को लागू करते हुए, कहना जारी रखा (आयतें 46-52): ''हाय तुम व्यवस्थापकों पर! कि तुम ने ज्ञान की कुंजी ले तो ली, परन्तु तुम ने आप ही प्रवेश नहीं किया और प्रवेश करने वालों को भी रोक दिया'' (आयत 52)। ''ज्ञान की कुंजी'' पुराने नियम में थी। उस नियम की यथार्थ व्याख्या मसीहा और उसके राज्य को समझने की कुंजी थी। परन्तु, ''व्यवस्था के [तथाकथित] विशेषज्ञों'' ने अपनी ही मान्यता बनाकर कि मसीहा एक सांसारिक राजा होगा, उस कुंजी को नकार दिया था। दूसरों पर गलत धारणाएं थोपने के कारण, इन अगुओं ने उस राजा के आ जाने पर अपने छात्रों को उसे पहचानने न दिया।[36]

यीशु के आरोपों से उसके शत्रुओं की घृणा और बढ़ गई। ''जब वह वहां से निकला, तो शास्त्री और फरीसी बहुत पीछे पड़ गए और छेड़ने लगे, कि वह बहुत सी बातों की चर्चा करे। और उस की घात में लगे रहे, कि उसके मुंह की कोई बात पकड़ें'' (आयतें 53, 54)।

भर्त्सना (12:1-12)

लूका का 12 अध्याय ''इतने में ... आरम्भ होता है।''[37] ''इतने में'' यीशु और फरीसियों में झगड़े के समय को कहा गया है। वे झगड़े लोगों की जिज्ञासा बढ़ने का कारण बने। सो आयत 1 कहती है, ''इतने में *जब हज़ारों की भीड़ लग गई, यहां तक कि लोग एक-दूसरे पर गिरे पड़ते थे,* तो वह सब से पहिले अपने चेलों से कहने लगा ...'' भीड़ में कुछ लोग उसके पक्ष में थे, जबकि दूसरे उसके विरोध में (देखें 12:56)।

भीड़ के सुनते, मसीह ने कई संदेश दे दिए। उसने फरीसियों से चौकस रहने की बात से आरम्भ किया: ''फरीसियों के कपटरूपी खमीर से चौकस रहना'' (आयत 1ख)। फरीसी अपनी बुराई छिपाने में माहिर थे (11:39); परन्तु अन्त में, उनकी दुष्टता जाहिर हो जानी थी (12:2)। यीशु ने अपने सुनने वालों से इन लोगों से न डरने का आग्रह ही नहीं किया (आयत 4), बल्कि अपने विश्वास का प्रचार करने (आयतें 3, 8), परमेश्वर के उनके साथ होने के भरोसे में दृढ़ रहने का आग्रह भी किया (आयतें 5-12)।[38]

सारांश

अगले पाठ में हम भीड़ के प्रश्नों के लिए यीशु के उत्तरों के रूप में दी गई सामान्य शिक्षा के साथ आगे बढ़ेंगे (लूका 12:13-13:9)।

मुझे आशा है कि प्रभु की चिन्ता इस पूरे पाठ में मिलती है। मुझे यह भी आशा है कि हममें से हर कोई दूसरों के प्रति अधिक तरस दिखाने के लिए प्रेरित होता है। ''यदि तुम इसका अर्थ

जानते कि मैं दया से प्रसन्न हूं, बलिदान से नहीं, तो तुम निर्दोष को दोषी न ठहराते'' (मत्ती 12:7क); ''इसलिए परमेश्वर के चुने हुओं की नाईं, जो पवित्र और प्रिय हैं, बड़ी करुणा और भलाई, और दीनता, और नम्रता और सहनशीलता धारण करो'' (कुलुस्सियों 3:12)।

नोट्स

बाइबल पाठ के कई विषयों को आधार के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। एक स्पष्ट दृष्टांत धन्य सामरी का है (लूका 10:25-37)।

टिप्पणियां

[1]विभिन्न समन्वयों में, समय के इस सामान्य काल की भिन्नता यीशु के जीवन के किसी भी दूसरे भाग की तरह बड़ी है। [2]ऐसा लगता नहीं है, क्योंकि उस समय विश्वासी यहूदी पर्व के लिए यरूशलेम में ही होंगे। [3]कुछ का तो यह भी मत है कि लूका 10:13, 15 में गलीली नगरों का उल्लेख है, इसलिए सत्तर का भेजा जाना गलील की महान सेवकाई में ही होना चाहिए। [4]बार-बार दोहराने वाला होने का जोखिम उठाकर, मैं आपको याद दिला दूं कि सुसमाचार के वृत्तांतों में कालक्रम मुख्य कारक नहीं था। [5]कुछ प्राचीन हस्तलेखों में बहत्तर (देखें NIV) कहा गया है। संख्या का महत्व नहीं है। [6]प्रचार करने के इन दोनों अभियानों में कई समानताएं और कुछ भिन्नताएं भी। एक भिन्नता यह थी कि बारह के कार्य से गलील की सामान्य सेवकाई *पूर्ण* हो गई, जबकि सत्तर का मिशन यहूदिया में प्रभु की सेवकाई की *तैयारी के लिए* था। [7]बाइबल से बाहर की परम्परा के अनुसार जिन दो लोगों के नाम यहूदा के स्थान पर नियुक्ति के लिए प्रस्तुत किए गए (प्रेरितों 1:23) वे उन सत्तरों में से ही थे। [8]यीशु स्पष्टतया यहूदिया को जाते हुए चेलों की भर्ती कर रहा था (लूका 9:57-62)। [9]मसीह ने अब ज्यादा एकांत पर ध्यान नहीं देना था और उसे सुनने वालों के निकट जाने से परहेज नहीं करना था। वह दृढ़ता से यहूदी अधिकारियों के साथ अन्तिम झगड़े और अपनी मृत्यु की ओर बढ़ रहा था। [10]इन पदों की तुलना करें:

लूका 10:2/ मत्ती 9:37, 38	लूका 10:3/ मत्ती 10:16
लूका 10:4/ मत्ती 10:11-13	लूका 10:5-8/ मत्ती 10:11-13
लूका 10:9/ मत्ती 10:7, 8	लूका 10:10, 11/ मत्ती 10:14
लूका 10:12/ मत्ती 10:15	लूका 10:13-15/ मत्ती 11:20-24
लूका 10:16/मत्ती 10:40	

[11]ऐसे रूपक का इस्तेमाल करें, जिसका वहां जहां आप रहते हैं, कोई अर्थ हो: ''जवान लड़कों की वह रोमांचित टोली जो अभी-अभी पहला मैच जीती हो,'' या ऐसा कोई उदाहरण। [12]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे एण्ड फिलिप वाई. पैंडलटन, *द फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल ऑर ए हारमनी ऑफ़ द फ़ोर गॉस्पल्स* (सिंसिनटी, द स्टैण्डर्ड पब्लिशिंग कं., 1914), 473। [13]कई बार, प्रभु ने अपने अनुयायियों को विषैले जीवों से बचाया (मरकुस 16:18; प्रेरितों 28:3-6); परन्तु इस संदर्भ में सांकेतिक अर्थ के लिए कहा गया है। [14]लूका 10:21 और मत्ती 11:25 में ''बालकों'' का संकेत बच्चों जैसे गुणों वाले चेलों की ओर है। [15]यह तथ्य कि यीशु ने आयत 30 में यरूशलेम से यरीहो की बात की, संकेत देता है कि वह उसी सामान्य क्षेत्र में शिक्षा दे रहा था। वह मार्ग बैतनिय्याह से होकर जाता था। [16]यीशु को ''गुरु'' कहकर वह व्यवस्थापक मसीह के प्रति सम्मान दिखा रहा था। [17]द लिविंग बाइबल का अनुवाद। [18]मूसा की व्यवस्था मसीह की मृत्यु तक लागू रही (कुलुस्सियों 2:14, 16, 17)। ''अनन्त जीवन पाने के लिए मैं क्या करूं?'' प्रश्न का उत्तर क्रूस के इस ओर अलग है। [19]पवित्र शास्त्र कहता है कि वह व्यवस्थापक ''अपने आप को धर्मी ठहराना'' चाहता था। द लिविंग बाइबल के अनुवाद

में सुझाव दिया गया है कि वह ''(कुछ तरह के लोगों के प्रति अपने प्रेम की कमी को) उचित ठहराना चाहता था।''[20]यह यीशु के जीवन के इस काल के दौरान कहे गए दृष्टांतों की पहली शृंखला थी; ये दृष्टांत केवल लूका की पुस्तक में ही मिलते हैं।

[21]एच. आई. हेस्टर, *द हार्ट ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट* (लिबर्टी, मिज़ोरी: क्वालिटी प्रैस, 1963), 167. [22]ध्यान रखें कि यहूदी लोग सामरियों से कितनी घृणा करते थे (यूहन्ना 4:9)। यह कहानी और भी शानदार हो जाती है, जब यह याद रखा जाता है कि कुछ समय पहले ही, मसीह को सामरियों द्वारा ठुकराया गया था (लूका 9:52, 53)। [23]लूका 10:38-42 में नगर का नाम नहीं दिया गया, पर यूहन्ना 11:1 हमें बताता है कि मरियम और मारथा बैतनिय्याह में रहती थीं। [24]बाइबल बताती है कि ''मारथा ने उसे *अपने* घर में उतारा।'' वह शायद तीनों भाई-बहनों में बड़ी थी। [25]कुछ लोगों का विचार है कि ''एक बात अवश्य है'' का अर्थ है ''*खाने का* एक कटोरा ही काफ़ी होना था, तू इतनी तैयारी करने में क्यों लगी हुई है?'' परन्तु, प्रभु के शब्दों का अर्थ शायद यह है कि, बहुत सी बातें *अच्छी* हैं, पर *आवश्यक* केवल एक ही है, और वह है प्राण की सम्भाल। [26]लूका 5:33 में यूहन्ना के चेलों द्वारा प्रार्थना करने का उल्लेख है, पर हमें यह लिखा नहीं मिलता कि यूहन्ना ने अपने चेलों को प्रार्थना के विषय में क्या और कब सिखाया था। यहूदी शिक्षक आम तौर पर अपने चेलों को प्रार्थना करना सिखाते थे। [27]यह तथ्य कि दोनों वृत्तांतों के शब्दों में अन्तर है, यह संकेत देता है कि प्रभु ने हम से कभी लिखकर प्रार्थना करने की इच्छा नहीं की। [28]इन आयतों पर विस्तृत अध्ययन के लिए इस पुस्तक का अगला पाठ ''हे प्रभु, हमें प्रार्थना करना सिखा दे'' देखें। [29]लूका 11:9-13 की तुलना मत्ती 7:7-11 से करें। [30]लूका 11:12 लूका की पुस्तक में विशेष है। इसके अलावा परमेश्वर के अपने बच्चों को दान देने के सम्बन्ध में, मत्ती में ''अच्छी वस्तुएं देना'' जबकि लूका में ''पवित्र आत्मा देना'' है (मत्ती 7:11; लूका 11:13)।

[31]इसे ''घबराए हुए मेज़बान का दृष्टांत'' सहित और भी नाम दिए गए हैं। [32]लूका ने 11:13 और 11:37 के बीच दो और कहानियां डाल दीं, जिनका अध्ययन हम पहले कर चुके हैं। [33]यीशु के उत्तर (आयतें 39-52) उस आदमी की प्रतिक्रिया (लूका 11:38) और उसके आगे की घटना (आयतें 53, 54) हमें यह विश्वास दिलाएगी कि मेज़बान का इरादा कुछ और ही था। [34]लूका 11:38 में अनुवादित शब्द ''स्नान'' बपतिस्मा (डुबकी) शब्द का रूप है। फरीसी इस बात से चकित था कि यीशु ने खाने से पहले स्नान नहीं किया था। [35]निम्न पदों की तुलना करें:

लूका 11:39-41/ मत्ती 23:25, 26 — लूका 11:42/ मत्ती 23:23
लूका 11:43/ मत्ती 23:6, 7 — लूका 11:44/ मत्ती 23:27, 28
लूका 11:46/ मत्ती 23:4 — लूका 11:49-51/ मत्ती 23:34-36
लूका 11:52/ मत्ती 23:13

[36]लूका 11:52 में देखने का एक और ढंग है कि व्यवस्थापक पतरस के बिल्कुल उलट करते थे: वे ''ज्ञान की कुंजियां'' छिपा लेते थे और इस प्रकार लोगों को राज्य में जाने नहीं देते थे, जबकि पतरस ने ''राज्य की कुंजियों'' (मत्ती 16:19) का इस्तेमाल किया और पिन्तेकुस्त के दिन राज्य/कलीसिया के द्वार खोल दिए (प्रेरितों 2:14-41)। [37]कुछ अनुवादों में ''इसी दौरान'' या ''इसी बीच'' है, परन्तु मूल शास्त्र में दिए गए शब्द का अर्थ ''जिसमें'' है। ''परिस्थितियों के अधीन'' से विचार समझ आता है। [38]लूका 12:1-12 की अधिकतर शिक्षा कहीं और भी दोहराई गई है। इन आयतों की तुलना करें:

लूका 12:1/ मत्ती 16:6; मरकुस 8:15
लूका 12:2-9/ मत्ती 10:26-33
लूका 12:8, 9/ मरकुस 8:38
लूका 12:10/ मत्ती 12:31, 32; मरकुस 3:28-30
लूका 12:11, 12/ मत्ती 10:19, 20